पाठ-3

एक तेजस्वी और दयावान बालक

वीरेश्वर एक साहसी बालक था। उत्तरी कोलकाता के एक वकील के परिवार में 12 जनवरी, 1863 ई. में उसका जन्म हुआ था। उसके पिता का नाम था विश्वनाथ दत्त तथा माँ का नाम भुवनेश्वरी देवी था। लोग प्यार से उसे 'बिले' नाम से भी पुकारते थे। एक दिन की बात है। वीरेश्वर एक मेला देखकर कुछ दोस्तों के साथ लौट रहा था। अचानक एक घोड़ा-गाड़ी तीव्र गति से आ गई और एक छोटा बच्चा गाड़ी के नीचे आ गया। सभी देखते ही रह गए। वीरेश्वर ने अपने साहस का परिचय देते हुए बड़ी फुर्ती से उस बच्चे को गाड़ी के नीचे से निकाला। सभी ने उसकी प्रशंसा की।

बालक वीरेश्वर के मन में दया का भाव भरा हुआ था। उसमें एक विशेष आदत थी, दान की। जरूरतमंद को देखकर अपने पिता की ही तरह वह जो भी कीमती वस्तु हो दान कर देता था, यहाँ तक कि स्वयं के कपड़े भी। कभी-कभार माँ इस कारण से उसे कमरे में बंद कर देती थीं। तब भी वह रास्ते से गुजरते हुए भिखारियों को बुलाकर खिड़की से कमरे का सामान दे देता था। मजबूर होकर माँ को कमरा खोल देना पड़ता था।

दिन व दिन वीरेश्वर बड़ा होने लगा। वह स्कूल भी जाने लगा। माँ ने स्कूल में उसका नाम रखा नरेंद्रनाथ। कोलकाता के विद्यासागर मेट्रपलिटन स्कूल में उसकी पढ़ाई शुरू हुई। नरेंद्रनाथ लिखाई-पढ़ाई में भी तेज था। दोस्तों के साथ खेलकर समय बिताना उसे ज्यादा पसंद था। लेकिन जब भी पढ़ता था मन लगाकर पढ़ता था। धीरे-धीरे पढ़ाई में उसकी रुचि बढ़ने

DAILY ASSAM

लगी। वह साहित्य, दर्शनशास्त्र, इतिहास आदि विषयों पर गंभीर अध्ययन करने लगा। प्रवेशिका परीक्षा में नरेंद्रनाथ प्रथम विभाग में उत्तीर्ण हुआ। उसके बाद कुछ दिनों के लिए प्रेसिडेंसी कॉलेज में भी अध्ययन किया। तत्पश्चात जनरल एसंब्लिज कॉलेज में उसने दाखिला लिया। आज यह कॉलेज स्कॉटिस चर्च कॉलेज नाम से परिचित है।

कॉलेज में पढ़ते समय नरेंद्रनाथ का प्रिय विषय रहा दर्शनशास्त्र। यूनान, जर्मनी आदि देशों के दर्शनशास्त्र का उसने विस्तारपूर्वक अध्ययन किया। उसके मन में तरह-तरह के प्रश्न उठने लगे। इन्हीं प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ते हुए वह एक दिन दक्षिणेश्वर काली मंदिर के साधक रामकृष्ण परमहंस के पास पहुँचा। उनके विचारों और सिद्धांतों से वह इतना प्रभावित हुआ कि उन्हें अपना गुरु मान लिया। अपने गुरु की छत्रछाया में नरेंद्र ने वेद, उपनिषद, गीता आदि का अध्ययन किया। गुरु रामकृष्ण परमहंस ने उसे बेसहारे और पीड़ित लोगों की सेवा करने के लिए प्रोत्साहित किया।

पिताजी विश्वनाथ दत्त के आकस्मिक निधन के बाद परिवार की आर्थिक स्थिति बिगड़ गई। उस समय नरेंद्र बी. ए. पास कर कानून की पढ़ाई कर रहा था। परिवार का दायित्व उसके नाजुक कंधों पर आ पड़ा। नरेंद्र को पढ़ाई छोड़नी पड़ी। फिर भी नरेंद्र ने अपना हौसला बनाए रखा और अपनी साधना व लगन से ज्ञानार्जन करता रहा। विश्व के जाने-माने कोलकाता विश्वविद्यालय से सम्मानीय अध्यापक पद के लिए उसे आमंत्रित किया गया था। लेकिन गरीब, लाचार और बेसहारे लोगों की सेवा करने के लिए उसने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया।

25 वर्ष की अवस्था में नरेंद्र ने गेरुवा वस्त्र धारण किया। संन्यास लेने के बाद वे स्वामी विवेकानंद नाम से लोकप्रिय हुए। तत्पश्चात स्वामी विवेकानंद जी ने पूरे भारतवर्ष की यात्रा की। इस यात्रा में उन्होंने राजाओं की विलासिता और प्रजाओं की दरिद्रता देखी। समाज में व्याप्त अंधविश्वासों और कुसंस्कारों को भी देखा। इन सब चीजों का उनके मन पर गहरा प्रभाव पड़ा और उन्होंने देश में आधुनिक एवं वैज्ञानिक शिक्षा का अभाव महसूस किया। मन ही मन स्वामी जी इन चीजों से मुक्त एक शक्तिशाली भारत का सपना देखने लगे।

वर्ष 1893 में अमरीका के शिकागो शहर में एक विश्व धर्म सम्मेलन आयोजित हुआ था। उस धर्म सम्मेलन में स्वामीजी ने हिंदू धर्म के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया था। शिकागो पर्लियामेंट ऑफ रिलीजन (Parliament of Religion) में स्वामीजी ने 'प्यारे अमरीकी बहनो और भाइयो' शब्दों के साथ ज्यों ही अपना ओजस्वी भाषण शुरू किया तो 7000

DAILY ASSAM

विद्वानों से भरा पूरा हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा था। आज भी दुनिया भर के लोग उस भाषण को याद करते हैं। इस भाषण के जरिए उन्होंने भारतीय अध्यात्म, सभ्यता और संस्कृति को विश्व भर में पहचान दिलायी थी। सम्मेलन में उनके विचार सुनकर दुनिया के तमाम विद्वान चकित रह गए। अमरीका में उनका भरपूर स्वागत हुआ। भाषण के बाद अमरीकी मीडिया ने उन्हें 'साईक्लोनिक हिंदू' (Cyclonic Hindu) नाम से नवाजा था। उस सम्मेलन के बाद विदेश में उनके भक्तों का एक समुदाय बन गया। अनेक लोग उनके शिष्य भी बन गए।

भारत वापस आकर स्वामीजी ने 'रामकृष्ण मिशन' नामक एक कल्याणकारी संस्था की भी स्थापना की। समस्त पृथ्वी के गरीब, बेसहारे लोगों की सेवा करना इस संस्था का प्रधान उद्देश्य है। आज देश-विदेश में इस संस्था की अनेक शाखाएँ काम कर रही हैं। स्वामीजी एक मानवतावादी संत थे। उन्होंने मानव की उन्नति और कल्याण को सर्वोपरि माना। स्वामीजी दुनिया के सभी धार्मिक विचारों को महत्व देते थे। उनकी ओजपूर्ण वाणी और उपदेश आज भी समस्त मानव जाति में शक्ति का संचार करता है।

देश की युवा शक्ति पर स्वामीजी को पूरा भरोसा था। इसलिए तन-मन से स्वस्थ होकर देश के भविष्य को बदलने की दिशा में काम करने के लिए आपने पूरी युवा शक्ति का आह्वान किया था।

स्वामीजी सिर्फ 39 साल तक ही जीवित रहे। वर्ष 1902 की 4 जुलाई को वेल्लुर मठ में उन्होंने अंतिम साँस ली। आज भी लोग इस महान दार्शनिक, ओजस्वी वक्ता, मानवतावादी संत को श्रद्धा के साथ स्मरण करते हैं। हमारा सौभाग्य है कि हम 2013 ई. में उनके जन्म का 150वाँ वर्ष मनाने वाले हैं। उनकी ही तरह हम भी देश की सेवा करें, यही हमारा परम कर्तव्य है।

DAILY ASSAM

अभ्यास-माला

पाठ से

1. निम्नलिखित **प्रश्नों के उत्तर दो :**

(क) वीरेश्वर ने साहस का परिचय कैसे दिया ?

(ख) नरेंद्रनाथ के गुरु कौन थे ? गुरु से वह कैसे मिला ?

(ग) नरेंद्रनाथ ने संन्यास लेने के बाद क्या किया ?

(घ) विश्व धर्म सम्मेलन कब और कहाँ आयोजित हुआ था ?

(ङ) 'रामकृष्ण मिशन' नामक संस्था का प्रधान उद्देश्य क्या है ?

(च) स्वामीजी ने युवा शक्ति का आह्वान किसलिए किया था ?

रामकृष्ण मिशन

2. **पूर्ण वाक्य में उत्तर दो :**

(क) वीरेश्वर रास्ते से गुजरते हुए भिखारियों को बुलाकर क्या करता था ?

(ख) स्कूल में वीरेश्वर का नाम क्या रखा गया था ?

(ग) संन्यास लेने के बाद नरेंद्रनाथ किस नाम से लोकप्रिय हुए ?

(घ) अमरीकी मीडिया ने स्वामीजी को किस नाम से नवाजा था ?

पाठ के आस-पास

1. बेसहारे और लाचार लोगों को सहायता पहुँचानेवाली कुछ संस्थाओं के नाम बताओ।

2. क्या तुमने कभी गरीब और बेसहारे लोगों की सहायता की है ? अगर नहीं, तो क्यों नहीं कर पाए, लिखो। अगर सहायता की है, तो कैसे लोगों की और किस प्रकार से सहायता की है, बताओ।

3. किसी सफल व्यक्ति की जीवनी से उनके विद्यार्थी जीवन की दिनचर्या के बारे में पढ़ो और उसके आधार पर आदर्श विद्यार्थी की दिनचर्या पर एक लेख लिखो।

3. **आओ, समूह में चर्चा करें :**

विवेकानंद जी की कौन-कौन सी बातें महापुरुष शंकरदेव से मिलती हैं ?

(आवश्यक हो, तो शिक्षक की सहायता लो)

भाषा-अध्ययन

आओ, जानें :

1. संधि शब्द का अर्थ है मेल। परस्पर निकटस्थ दो शब्दों के प्रथम की अंत्यध्वनि और दूसरे की आद्यध्वनि के बीच जो मेल होता है उसे संधि कहते हैं।

विद्या + आलय = विद्यालय

पूर्व + उत्तर = पूर्वोत्तर

निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद करो :

हिमालय = हिम + आलय

मेघालय = ... + ...

विद्यार्थी = ... + ...

महोत्सव = ... + ...

सूर्योदय = ... + ...

आओ, जानें :

उपसर्ग- जो शब्दांश शब्द के आदि में जुड़कर उसके अर्थ को बदल देता है, उसे **उपसर्ग** कहते हैं।

'अ' उपसर्ग जोड़कर तीन शब्द बनाए गए हैं-

प्रसन्न - अप्रसन्न

भाव - अभाव

सुविधा - असुविधा

आओ, समूह में बैठ कर 'प्र', 'कु', 'अ', 'वि' उपसर्ग-युक्त एक-एक शब्द पाठ से छाँटकर लिखें :

जैसे- प्र + गति = प्रगति

रेखांकित उपसर्ग का प्रयोग करके अन्य दो शब्द बनाओ :

विरोध = ... , ...

उपकार = ... , ...

सुयोग्य = ... , ...

प्रदीप = ... , ...

अभिमान = ... , ...

आओ, जानें :

प्रत्यय- जो शब्दांश शब्द के अंत में जुड़कर नया शब्द बनाने के साथ-साथ उसके अर्थ में विशेषता पैदा कर देता है, उसे **प्रत्यय** कहते हैं।

DAILY ASSAM

जैसे- भला + ई = भलाई

अब तुम लोग 'ईय' एवं 'इत' प्रत्यय लगाकर कुछ नए शब्द बनाओ :

जैसे - राष्ट्र + ईय = राष्ट्रीय प्रभाव + इत = प्रभावित

'ईय'	'इत'

प्रत्यय जोड़कर शब्द बनाओ :

स्वाधीन + ता = ...

दूध + वाला = ...

पत्र + कार = ...

आओ, जानें :

यह मोहन <u>का</u> घर है।

वे रमेश <u>के</u> मित्र हैं।

रीना <u>की</u> घड़ी सुंदर है।

ऊपर के वाक्यों में आए 'का', 'के', 'की' का प्रयोग इनके बाद आने वाले शब्दों के लिंग तथा वचन के अनुसार हुआ है। पुल्लिंग एकवचन में 'का', पुल्लिंग बहुवचन में 'के' तथा स्त्रीलिंग के दोनों वचनों में 'की' का प्रयोग किया जाता है।

इसे भी जानो :

मैं, हम, तू और तुम सर्वनाम-शब्दों के साथ <u>का</u>, <u>के</u>, <u>की</u> के स्थान पर <u>रा</u>, <u>रे</u>, <u>री</u> का प्रयोग होता है। जैसे- मैं- मेरा, मेरे, मेरी, हम-हमारा, हमारे, हमारी, तू- तेरा, तेरे, तेरी, तुम - तुम्हारा, तुम्हारे, तुम्हारी।

निजवाचक आप सर्वमान के साथ ना, ने, नी का प्रयोग होता है :

अपना, अपने, अपनी।

4. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध रूप में लिखो :

(क) मेरा / मेरी नाम दीपिका है।

(ख) हमारा / हमारे पिताजी आ रहे हैं।

(ग) तुम्हारे / तुम्हारा दोस्त बाजार जा रहा है।

DAILY ASSAM

(ङ) भारत का / की / के इतिहास गौरवमय है।

योग्यता विस्तार

1. **विद्यार्थी पाठ के आधार पर विवेकानंद जी के जीवन की महत्वपूर्ण बातों को छोटे-छोटे कार्डों पर लिखकर शिक्षण-कोण में रख देंगे। उदाहरण के लिए -**

जन्म - 1863 ई. में
मृत्यु - ई. 1902 की 4 जुलाई को

पिता- विश्वनाथ दत्त
माता- भुवनेश्वरी देवी

फिर सभी विद्यार्थी छोटे-छोटे समूहों में बँट जाएँगे और इन कार्डों पर लिखी गई बातों के आधार पर एक जीवनी प्रस्तुत करेंगे :

उसका नाम रखा गया नरेंद्रनाथ

कोलकाता के विद्यासागर मेट्रपलिटन स्कूल में उसकी पढ़ाई शुरू हुई।

25 वर्ष की अवस्था में नरेंद्र ने गेरुवा वस्त्र धारण किया।

उसके पिताजी के आकस्मिक निधन के बाद परिवार की आर्थिक स्थिति बिगड़ गई।

रामकृष्ण परमहंस को अपना गुरु मान लिया।

स्वामीजी ने एक कल्याणकारी संस्था की स्थापना की, जिसका नाम है-रामकृष्ण मिशन। अनेक लोग उनके शिष्य भी बन गए।

वर्ष 1893 में अमरीका के शिकागो शहर में एक विश्व धर्म सम्मेलन आयोजित हुआ था।

ऐसे ही अन्य महान व्यक्ति के जीवन से जुड़ी सूचनाएँ अथवा किस्से-कहानियाँ आदि छोटे-छोटे कार्डों पर लिखकर शिक्षण-कोण में रखे जा सकते हैं।

2. **शब्द-अंत्याक्षरी का खेल खेलो :**

क ..... **कलम** **मन** **नर** **रसाल** **लता**

ग .....

ल .....

DAILY ASSAM

3. आओ, संख्याओं का ज्ञान प्राप्त करें :

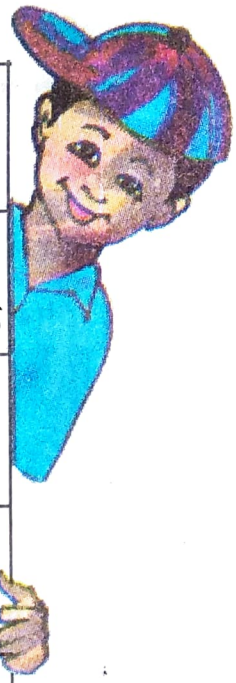

५१ इक्यावन	५२ बावन	५३ तिरपन	५४ चौवन	५५ पचपन	५६ छप्पन	५७ सत्तावन	५८ अट्ठावन
५९ उनसठ	६० साठ	६१ इकसठ	६२ बासठ	६३ तिरसठ	६४ चौंसठ	६५ पैंसठ	६६ छियासठ
६७ सड़सठ	६८ अड़सठ	६९ उनहत्तर	७० सत्तर	७१ इकहत्तर	७२ बहत्तर	७३ तिहत्तर	७४ चौहत्तर
७५ पचहत्तर	७६ छिहत्तर	७७ सतहत्तर	७८ अठहत्तर	७९ उन्नासी	८० अस्सी	८१ इक्यासी	८२ बयासी
८३ तिरासी	८४ चौरासी	८५ पच्चासी	८६ छियासी	८७ सत्तासी	८८ अट्ठासी	८९ नवासी	९० नब्बे
९१ इक्यानवे	९२ बानवे	९३ तिरानवे	९४ चौरानवे	९५ पंचानवे	९६ छियानवे	९७ सत्तानवे	९८ अट्ठानवे
९९ निन्यानवे	१०० सौ						

आओ, पाठ में आए कुछ शब्दों के अर्थ जानें :

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
तेजस्वी	=	तेज वाला, प्रखर बुद्धिवाला, प्रभावशाली	निधन	=	मृत्यु, देहावसान
			नाजुक	=	कोमल
तीव्र	=	तेज	हौसला	=	साहस
आदत	=	अभ्यास	लाचार	=	उपायविहीन
जरूरतमंद	=	जिसे आवश्यक हो	ओजस्वी	=	ओजपूर्ण
मजबूर होकर	=	विवश होकर, बाध्य होकर	तमाम	=	सारा
			नवाजना	=	अलंकृत करना, अर्पित करना
दिन व दिन	=	दिन के बाद दिन			
यूनान	=	ग्रीस	सर्वोपरि	=	सबसे ऊपर

DAILY ASSAM